विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 6 जून 2020

वर्ग सप्तम शिक्षक। राजेश कुमार पाण्डेय

दिव्य वाणी पाठः तृतीयः

सुभाषितानि

सुभाषितानि का अर्थ सुंदर वचन

हमारे जीवन में स्मरण करने योग्य सुंदर युक्तियों का बहुत उपयोग होता है। अपने वार्तालाप में किसी बात पर बल देने के लिए तथा भाषणों में उद्धरण के लिए इन युक्तियों का प्रयोग होता है। संस्कृत भाषा में कई ग्रंथ है जहां यह सुंदर युक्तियां मिलती हैं इन्हें सुभाषित भी कहा जाता है । संस्कृत के प्राचीन कथाग्रंथ पंचतंत्र से लिए गए इस पाठ के श्लोकों में जीवन को दिशा निर्देश देने वाली बातें कही गई हैं इन श्लोकों को कंठाग्र जीवन का परिमार्जन हो सकता है।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम।।

वृद्ध का नित्य सेवा करने से उस मनुष्य का चार चीज बढ़ता है आयु विद्या यश और बल।

नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनः जनाः।

शुष्क वृक्षाश्चय मूर्खाश्च, न नमन्ति कदाचन।।

फलों के आने से तेजू जाते हैं। उसी प्रकार सज्जन पुरुष हम संपत्ति गुण प्राप्त हो जाने से विनम्र हो जाते हैं। जिस पेड़ में फल नहीं होते वह झुकता नहीं जिस प्रकार एक मूर्ख व्यक्ति के पास नम्रता नहीं होने कारण नहीं झुक पाता है पाता है और वह मूर्ख के जैसा व्यवहार करता है।

प्रियवाक्य प्रादनेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।

तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

प्रिय वचन बोलने से सभी प्राणी,जीव संतुष्ट होते हैं इसलिए सभी को प्रिय ही बोलना चाहिए प्रिय बोलने में कोई कंजूसी नहीं करनी चाहिए।